हमारे नगर.... हमारे मंदिर....

पपौराजी (टीकमगढ़) जैन तीर्थ

टीकमगढ़ से मात्र 5 किलोमीटर दूर सागर-टीकमगढ़ मार्ग पर पपौराजी जैन तीर्थ हैं, जो कि बहुत प्राचीन हैं। यहां पर 108 मंदिर हैं, जो कि सभी प्रकार के आकार में बने हुए हैं, जैसे रथ आकार, कमल आकार एवं कई सुन्दर भोंयरे भी हैं। इस क्षेत्र में मंदिर रचनाशिल्प और कलात्मकता की दृष्टि से अद्वितीय है। पत्थरों पर खुदाई इतनी स्पष्ट हैं, मानो कलाकारों ने पत्थर को मोम बनाकर सांचे में ढाल दिया हो। इन मंदिरों में खजुराहो की तरह पाषाण प्रतिमाओं की कलात्मकता देखते ही बनती हैं।

वास्तुकला का अद्भुत स्वरूप हैं ये मंदिर...– क्षेत्र पर जो चौबीसी बनी हैं, वह भारतवर्ष में अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। इसमें एक बड़े मंदिर के चारों ओर प्रत्येक दिशा में 6-6 मंदिर हैं। प्रत्येक वेदिका की अलग से परिक्रमा को चतुर्दिक झरोखों के रूप में जिस तरह से निर्मित किया गया हैं, वह वास्तुकला का अद्भुत नमूना हैं। यहां पर प्राचीन समुच्चय या सभा मंडल हैं। इसके मध्य में एक मंदिर हैं और उसके चारों ओर 12 कलात्मक मठ हैं, जो समवशरण की सभा के घोतक हैं। इसे देखकर ऐसा प्रतीत होता हैं कि यह प्राचीनकाल में तपोभूमि रहा होगा, जहां पर साधुजन निवास करते होंगे।

प्राचीन समुच्चय के समीप दो विशाल भोंयरे (भूगर्भ स्थित मंदिर) हैं जिसमें संवत् 1202 की अत्यंत प्राचीनतम प्रतिमाएं हैं, जो देशी पाषाण से निर्मित होते हुए भी अपनी चमक ओर आर्कषण से 900 वर्ष बाद भी मानव को आश्चर्यचकित कर देती हैं। भगवान पार्श्वनाथ की दुर्लभ पद्मावती संयुक्त अद्वितीय कलात्मक प्राचीन प्रतिमा, जिसके चारों ओर चित्र बने हुए हैं, अत्यंत मनोज्ञ हैं। इस प्रतिमा के सौन्दर्य को देखकर भक्त आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

पपौराजी में अतिशयकारी 'पतराखन कुआं' – यह घटना विक्रम संवत् 1872 की हैं। एक वृद्धा मां द्वारा मंदिर का निर्माण कराया गया। इसकी मांगलिक बेला पर अपार जनसमूह को प्रीतिभोज दिया जा रहा था। पानी की पूर्ति कुओं के खाली हो जाने के कारण असंभव –सी प्रतीत होने लगी। पानी के अभाव से लोग व्याकुल होने लगे और वृद्धा मां के संबंध में अनर्गल बोलने लगे, तो वृद्धा मां अत्यंत दुखी होकर रोने लगीं और तुरंत उसने प्रतिज्ञा ली कि जब तक पानी की व्यवस्था नहीं हो जाती, मैं अन्न –जल ग्रहण नहीं करूंगी। ऐसा कहकर वे कुएं की तलहटी में समाधि अवस्था में बैठ गई। कुछ ही समय में कुएं में पानी के अनेक स्त्रोत फूट निकले और वह वृद्धा मां उस पानी के साथ ऊपर आती गई। यहां तक कि पानी कुएं से भी बाहर आ गया। उपस्थित जनसमूह द्वारा देवों से प्रार्थना करने पर ही पानी कुएं से निकलना बंद हुआ। तभी से यह कुआं 'पतराखन' के नाम से जाना जाता हैं।

हार्दिक बधाई

चियांमाय थाईलैंड में सम्पन्न हुई एशियन यूथ चैस चैंपियनशिप 2018 के अंडर 14 बालिका वर्ग में म.प्र. एवं भारत की लाडली बेटी 14 वर्षीय 1894 अंतरराष्ट्रीय फिडे रेटिंग प्राप्त शतरंज खिलाडी नित्यता जैन ने भारतीय टीम को एशियन गोल्ड मैडल दिलाकर एवं इसी वर्ग की व्यक्तिगत स्पर्धा में एशियन कांस्य पदक जीतकर प्रदेश एवं देश को गौरान्वित किया ।व्यक्तिगत चैंपियनशिप में नित्यता जैन को कांस्य स्थान प्राप्त हुआ। दिव्या के व्यक्तिगत संयुक्त प्रदर्शन के कारण भारत को टीम स्पर्धा का गोल्ड मैडल प्राप्त हुआ। यह नित्यता के भारत के लिए पहले अंतरराष्ट्रीय मेडल्स हैं।

इन मेडल्स को जीतने के कारण नित्यता को वर्ल्ड चेस फेडरेशन द्वारा वुमन कैंडिडेट मास्टर (WCM) की उपाधि भी प्रदान की गई। अब चैस की दुनिया में इससे बड़ी उपाधि मिलने तक नित्यता को WCM नित्यता जैन के नाम से जाना जाएगा। नित्यता मध्यप्रदेश की पहली महिला खिलाड़ी हैं जिसे यह उपाधि प्रदान की गई। हाल ही में नित्यता नेशनल स्कूल चैस चैंपियन 2018 बनी थी। मात्र 14 साल की नित्यता कई इंटरनेशनल एवं रेटिंग टूर्नामेंट्स में वूमन इंटरनेशनल मास्टर खिलाड़ी को हरा चुकी हैं एवं इंटरनेशनल मास्टर खिलाडियों को बाजी ड्रा के लिए मजबूर कर चुकी हैं। लगभग 15 बार अलग अलग वर्गों में म.प्र. राज्य विजेता नित्यता पिछले 3 सालों से लगातार म.प्र. सीनियर महिला चैंपियन भी हैं।

डॉ. पंकज जैन की पुस्तक को राष्ट्रीय पुरस्कार

शासकीय महिला पालीटेक्निक महाविद्यालय में विभागाध्यक्ष के पद पर पदस्थ डॉ. पंकज जैन द्वारा लिखित पाठ्यपुस्तक विपणन प्रबंधन जो कि राजीव गांधी प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विभिन्न डिप्लोमा पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती हैं का चयन अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) द्वारा राष्ट्रीय तकनीकी पाठ्य पुस्तक पुरस्कार 2016 हेतु किया गया हैं डॉ. जैन को पुरस्कार में 31 हजार रुपए नगद एवं सम्मान पत्र प्रदान किया जावेंगा। 4 मई को नई दिल्ली में मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री भारत सरकार डॉ. सतपाल सिंह द्वारा श्री जैन को पुरस्कृत किया गया।

डॉ. जैन को गतवर्ष भी उनके द्वारा लिखित पाठ्यपुस्तक वित्तीय लेखांकन पर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानीत किया जा चुका हैं। डॉ. जैन एक लेखक एवं प्राध्यापक के साथ ही राज्यस्तरीय मास्टर ट्रेनर एवं मोटीवेटर भी हैं। नगर की कई सामाजिक संस्थाओं में आपकी सक्रिय भूमिका रहती हैं।

संकल्प लें अपने माता–पिता को कभी भी दुख ना दें –

पुष्पेन्द्र मोदी, बाकल। जिसने अपनी आत्मा को जान लिया उसे आगे कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं। भगवान महावीर की अहिंसा की व्याख्या तथा उनकी करुणा एवं दया विश्वभर में जानी जाती है। महावीर जैन समाज के ही नहीं बल्कि जन जन के थे। उनके सिद्धांत सभी वर्ग के लिए थे जैसे सूर्य का प्रकाश, वृक्षों की छाया। सभी मौलिक होती है। उसी तरह भगवान महावीर ने कभी नहीं कहा कि मै जैन हूँ जिन के उपासक जैन होते है। जैन उत्कृष्ट जीवन जीने की शैली है। उक्त आशय के सारगर्भित उद्गार भगवान महावीर स्वामी की 2617वीं जयंती के अवसर पर 108 आचार्य गुरुवर विद्यासागरजी महाराज की परम प्रभावक शिष्य 105 पूर्णमति माताजी ने विशाल धर्मसभा में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि मां के उपकारों का बिल पूरा देश बेच कर भी नहीं चुकाया जा सकता। माता पिता तो माली की तरह होते हैं जो अपने द्वारा लगाई गई बेल को ऊंचाई तक जाते देखना चाहते है। भगवान महावीर का उदाहरण देते हुए कहा कि गर्भ में मां को तकलीफ ना हो इसको लेकर उन्होंने अपनी हलचल भी रोक दी थी, आज संकल्प लें अपने माता पिता को कभी भी दुख ना दें।

प्रात: अभिषेक अपराह्न निकली श्रीजी की शोभायात्रा; कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रात: श्री पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में अभिषेक पूजन, सामूहिक शांतिधारा संगीत में पूजन अर्चन तथा दोपहर में बैंड बाजों के साथ श्री जी की भव्य बैंड बाजों के साथ शोभायात्रा नगर भ्रमण के लिए गुरुमति माताजी, ध्येयमति माताजी, आत्ममति माताजी, संयतमति माताजी की सत्संग सानिध्य में निकाली गई। जो श्री पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से प्रारंभ होकर पुलिस लाइन अबंतीबाई तिराहा बस स्टेण्ड होते हुए वापस मुख्य समारोह स्थल पहुंची। जहां पर प्रमुख पात्रों की बोलियां ली गई तथा ब्रह्मचारी आशुतोष जैन, शुभम राज जैन जबलपुर द्वारा महावीर विधान का आयोजन किया गया। रात्रि में संगीत भारती एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को सानंद संपन्न किया गया। आयोजन में प्रमुख रुप से बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन विमल सिंघई, संजय मोदी द्वारा किया गया।

महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया

कल्याण, संजय जैन। महावीर स्वामी का जन्म महोत्सव के साथ आचार्य श्री विद्यासागरजी के 50 व दीक्षा दिवस के अंतर्गत सयंम स्वर्ण महोत्सव के अवसर पर श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, कल्याण में बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ इसे मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री 1008 भगवान महावीर स्वामीजी को पांडुशिला पर विराजमान किया गया फिर उसके बाद इन्द्रों द्वारा उनका अभिषेक और शांतिधारा की गई। भगवान महावीर स्वामीजी की सामूहिक पूजा में समाजजनों ने भाग लिया। श्री संजय जैन, सुनील जैन एवं श्रीमती प्रतिभा जैन ने गीतों के साथ पूजा और भजन गाये। समाजजनों ने इस धार्मिक उत्सव में पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ अपनी धार्मिक भावनाओं का परिचय देते हुए बहुत ही आनंद लिया। इंद्र इन्द्राणी आदि ने नृत्य आदि किये। 10 बजे श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिरजी से बैंड बाजों के साथ भव्य शोभा यात्रा निकली गई जो कि मुख्य मार्ग से होती हुई ब्राह्मी सभा हाल तक गई। श्रावकों ने भजनों के साथ गरबा खेला और जिनवर की भक्ति गाते नाचते हुए कार्यक्रम स्थल गए। इस चल समारोह का संचालन श्री अभय जैन, जिनेन्द्र वैद्य, जयंत किल्लेदार, विपिन जैन, प्रदीप जैन, श्री श्रेयांश कासलीवाल एवं महिलाओ में श्रीमती रेखा जैन, मंजू जैन, अर्चना जैन, शिरस जैन, श्रीमती बबिता मोदी आदि समाज की महिलाओं ने किया। जुलूस का मुख्य आकर्षण का केंद्र रहा जैन समाज की महिलाओं द्वारा किया जा रहा गरबा था। इस बार के महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक और सयंम स्वर्ण महोत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. पी.एन. जैन(टाटा मेमोरियल, मुंबई) साथ में श्रीमती वंदना सल्गिया (ऊर्जा मंडल मुंबई की महामंत्री और महाराष्ट्र विद्युत मंडल) विशेष अतिथि ठाणे को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि और विशेष अतिथि का स्वागत श्रीफल भेंटकर किया गया। उनके द्वारा दीप प्रज्जवलित कर सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ किया गया। नृत्य द्वारा मंगला चरण जिसे श्रीमती मीनी कासलीवाल, दीपशिखा जैन और श्रीमती सपना गंगवाल ने प्रस्तुत किया। इसके बाद पाठशाला के बच्चों ने फैंसी ड्रेस जैन धर्म पर आधारित की प्रस्तुति दी, दोनों ही कार्य को समाजजनों और अतिथियों ने बहुत ही सराहा। महिलाओं ने भगवान महावीर स्वामीजी के भजन और बधाई गाए। श्रीमती रेशु जैन ने नेमिनाथ और महावीर स्वामी के ऊपर भजन गाए। मंच का संचालन श्री संजय जैन ने किया। जिन्होंने बीच बीच में अपने ही अंदाज में गीत भजन और धार्मिक शायरी आदि के द्वारा समां बांधा, जिसके कारण कार्यक्रम में चार चाँद लग गए और कही भी कार्यक्रम में नीरसता नहीं आई। उनके मंच संचालन को सकल जैन समाज ने बहुत ही सराहा। कु. मिनी जिनेन्द्र वैद पुत्री श्रीमती शिरस जैन ने महावीर स्वामी जी के बारे में अपने विचार रखें। जैन समाज के साथ साथ मुख्य और विशेष अतिथियों ने बहुत बहुत सराहा। डॉ. पी.एन जैन जी ने जैन धर्म पर अपने संक्षिप्त उद्बोधन में बहुत ही सटीक विचार रखें। श्रीमती वंदन सालगियाजी ने अपने विचारों में जैन धर्म और जैन परम्पराओं पर जैन समाज के लोगों को ध्यान खींचा। समाज के प्रतिभाशाली बच्चों का भी सम्मान किया गया, इस बार दो लडकियों ने 10वीं में जैन समाज का नाम रोशन किया। जिन्होंने 90% के उपर अंक अर्जित किये, इसके लिए दोनों को मेडल के साथ प्रशस्ति पत्र, मुख्य और विशेष अतिथियों द्वारा दिया गया जो कि हर वर्ष की तरह श्रीमती चन्द्रप्रभा माताश्री संजय, अर्चना जैन की ओर से थे। पाठशाला के बच्चां को भी पुरस्कार आदि दिये गये। अंत में मुख्य और विशेष अतिथियों को सकल दिगम्बर जैन समाज एवं श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंडल, कल्याण द्वारा स्मृति चिन्ह श्री वकारियाजी, श्रीमती मीता कासलीवाल और श्रीमती कल्पना एवं श्रीमती रेखा जैन ने भेंट किये। अंत में श्री जयंत किल्लेदारजी ने सभी का आभार व्यक्त किया।